विचार बिन्दु

संसार भर के उपद्रवों का मूल व्यंग्य है। हृदय में जितना यह घुसता है उतनी कटार नहीं। –जयशंकर प्रसाद

क्या खुशहाल ज़िंदगी जीने का हमारा सपना कभी पूरा होगा?

दो दिनों से एक यात्रा वृत्तांत में डूबा हुआ हूं। इधर हिंदी में कथेतर खूब लिखा जा रहा है और उसमें काफी कुछ ऐसा है जो हमारी भाषा की समृद्धि का परिचय देता है। मैं जिस यात्रा वृत्तांत में डूबा हुआ हूं, उसका शीर्षक है– **ख़ुश देश का सफ़र।** इसे लिखा है पल्लवी त्रिवेदी ने, जो साहित्य की दुनिया का बहुत परिचित नाम नहीं है। वैसे उनका एक व्यंग्य संग्रह और एक कविता संग्रह प्रकाशित हो चुका है और मध्यप्रदेश का वागीश्वरी सम्मान भी उन्हें मिल चुका है। जिस किताब की मैं बात कर रहा हूं उसका उपशीर्षक है:– 'भोपाल से भूटान : चार दोस्तों की रोड ट्रिप।' पल्लवी और उनके तीन दोस्तों की यह यात्रा उस तरह की व्यवस्थित यात्रा नहीं है जिस तरह की यात्रा आजकल आम पर्यटक करता है। सब कुछ पूर्व नियोजित और व्यवस्थित। ऐसी यात्रा करने वालों को पल्लवी ने टूरिस्ट कहा है, जबकि वे अपनी यात्रा को ट्रेवलर्स की यात्रा कहती हैं। बहुत मोटी रूपरेखा उनके पास है और वे लोग निकल पड़े हैं। भोपाल से भूटान की लगभग चार हज़ार किलोमीटर की यह यात्रा बीस दिन में पूरी हुई। इसी यात्रा का वृत्तांत है यह किताब।

इन लोगों ने गंतव्य के लिए चुना भूटान को। भूटान एक बहुत छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल मात्र 38394 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या है लगभग सात लाख। लेकिन जो बात इस देश को ख़ास बनाती है वह यह कि यह एक खुशहाल देश है। विश्व खुशहाली सूचकांक, जिसमें 146 देशों की सूची में भारत 136 वें स्थान पर है, उसमें भले ही भूटान न हो, उसकी गणना दुनिया के सर्वाधिक खुशहाल देशों में की जाती है। पल्लवी और उसके साथी भूटान में घूमते हुए इस बात की भी पडताल करते चलते हैं कि आखिर क्या वजह है कि भूटान के लोग इतने ज़्यादा खुशहाल है! एक जगह वे लिखती हैं:– *"आज सुबह से हम थिम्पू की गलियों, चौराहों और सड़कों के चक्कर काट रहे थे और यहां की पार्किंग व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, करीने से सजी दुकानों और प्रदूषणमुक्त आबोहवा को देखकर मुग्ध हो गए थे। भारत में ऐसी सड़कों की कल्पना भी असम्भव है जहां कोई गाड़ी नो-पार्किंग ज़ोन में ना खड़ी हो, हमारे बाज़ारों में ऐसी कोई दुकान नहीं जिसके आगे अतिक्रमण कर दुकान को विस्तार न दिया गया हो, ऐसा कोई चौराहा नहीं जहां बत्ती के हरा होने के तीन सेकेण्ड पहले ही चालक अपनी गाड़ी न बढ़ा देते हों। सब भाग रहे हैं हमारे यहां, सबको जल्दी है। किस बात की है? ये पता नहीं। यहां किसी को कोई जल्दी नहीं है। सब तसल्ली से अपना काम कर रहे हैं। कोई आपाधापी नहीं, कोई हड़बड़ाहट नहीं। क्या यह एक छोटी-सी बात अंदरूनी शांति और सुकून के लिए ज़रूरी नहीं?"*

यह पढ़ते हुए आपके मन में भी आ रहा होगा कि भला भारत से भूटान की तुलना कैसे की जा सकती है? कितना बड़ा देश है हमारा! और कितनी ज़्यादा जनसंख्या है! एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले देश में इतनी समस्याओं का होना स्वाभाविक ही है। इस बात पर पल्लवी भी विचार करती हैं। लेकिन वे सवाल भी करती हैं:– *"क्या सिर्फ अधिक जनसंख्या होने से हम अपने देश के भ्रष्टाचार, बदहाली, प्रकृति और देश के प्रति गैर ज़िम्मेदाराना रवैया, गंदगी और हर जगह फैली अव्यवस्था को जस्टिफाई कर सकते हैं?"* उनका सोच बहुत साफ़ है। वे कहती हैं: *एक ख़ुशहाल देश बनाने में कम जनसंख्या मददगार ज़रूर साबित हो सकती है लेकिन यही सर्वोच्च घटक नहीं है। हम अपने देश की बदहाली का ठीकरा जनसंख्या के अलावा आसानी से अशिक्षा, बेरोज़गारी और ग़रीबी पर फोड़ देते हैं लेकिन भूटान भारत से भी ज़्यादा ग़रीब देश है, जहां संसाधन बेहद कम हैं और बेरोज़गारी यहां भी है।"*

अगर एक छोटा-सा देश, अपने साधनों की सीमाओं के बावज़ूद बेहद खुशहाल देश बन सकता और बना रह सकता है तो आखिर ऐसी क्या बातें हैं कि हमें सतत अभावों और उपेक्षाओं में ही ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ रही है? क्या कभी ये हालात बदलेंगे? क्या कभी ऐसा समय आएगा जब हमारी मूलभूत ज़रूरतें पूरी हो चुकी होंगी और हम भी खुशहाल ज़िंदगी जी रहे होंगे?

मैं यह संपादकीय पल्लवी त्रिवेदी की इस किताब की समीक्षा करने के लिए नहीं लिख रहा हूं। लेकिन इस किताब ने मुझे उद्वेलित किया है और उस उद्वेलन को आपसे साझा करने के लिए इस किताब के हवाले से अपनी बात कहने की कोशिश कर रहा हूं। मेरा यह मानना है कि आज़ादी के बाद के इन बरसों में हम जितना कर सकते थे उतना हमने नहीं किया है। आज भी हम जो कर सकते हैं और जो हमें करना चाहिए वह न करके हम कुछ और ही करने में अपनी ऊर्जा नष्ट कर रहे हैं। क्या हमने कभी इस बात पर गम्भीरता से विचार किया है कि हमारी, मतलब हमारी सरकारों की प्राथमिकता क्या होनी चाहिए? क्या कभी सरकारों ने बहुत गम्भीरता और ईमानदारी से इस बात के प्रयास किए कि इस देश के हर नागरिक को चिकित्सा और शिक्षा की आधारभूत सुविधा सुलभ हो जाए? जो भी प्रयास हुए वे आधे अधूरे मन से हुए। आपने स्कूल खोले तो भवन नहीं बनाए, भवन बनाए तो शिक्षक भर्ती नहीं की, शिक्षक भर्ती की तो अन्य व्यवस्थाओं के लिए बजट नहीं दिया। यही हाल चिकित्सा का भी रहा। राजस्थान में सरकार ने हाल में खूब ढोल ढमाकों के साथ आम जन के लिए निशुल्क चिकित्सा सुविधा की घोषणा की, जो देर से ही सही, सही दिशा में उठाया गया एक कदम था, लेकिन आज हालत क्या है? निजी अस्पताल रोगियों को लौटा रहे हैं, सरकारी अस्पताल कम और आधे-अधूरे हैं, सरकारी दवाइयां आउट ऑफ स्टॉक हैं। मतलब एक अच्छी योजना अभी से दम तोड़ती नज़र आ रही है। यही हाल सड़कों का है, यही हाल पेयजल सुविधा का है। घोषणाएं खूब होती हैं। उनका प्रचार भी खूब होता है लेकिन बहुत जल्दी वे योजनाएं निष्प्रभावी हो जाती हैं। न उनकी मॉनिटरिंग होती है और न उनके मार्ग में आए हुए अवरोधों को हटाने कोई गम्भीर प्रयास होते हैं। परिणाम यह कि आम नागरिक जितना बदहाल पहले था, उतना ही अब भी रहता है। उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हो पाता है।

अब यहीं ज़रा ठहर कर भूटान के बारे में पल्लवी जी का अनुभव जान लें। वे लिखती हैं:– *"भूटान में हमने ग़ौर किया कि यहां सरकार ने इन्फ्रास्ट्रक्चर पर काफ़ी ज़ोर दिया है। प्रति व्यक्ति आय भले ही कम हो लेकिन एक नागरिक के तौर पर बेहतरीन सार्वजनिक सुविधाएं देने का प्रयास किया गया है। चाहे सड़कें हों, बिजली या पानी। कोई इन सुविधाओं से वंचित नहीं है। शिक्षा और स्वास्थ्य यहां सबके लिए फ्री हैं। भारत में उलटा है। शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं इतनी महंगी हैं कि एक आदमी की सारी पूंजी बच्चों को पढ़ाने में या एक बार कोई बड़ी बीमारी हो गई तो उसी में खर्च हो जाती हैं बल्कि कर्ज़ मांगने की नौबत आ जाती है। सरकारी स्कूलों और अस्पतालों में कोई जाना नहीं चाहता और निजी शिक्षण और स्वास्थ्य संस्थान इतने महंगे हैं कि ग़रीब आदमी की हैसियत नहीं वहां तक पहुंच पाने की। यही कारण है कि एक बड़ा तबका अच्छी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य से वंचित है।"*

मुझे हमेशा यह लगता है कि हमारे पास न पैसों की कमी है और न काम करने की दक्षता की। लोगों में सेवा और समर्पण का भाव भी कम नहीं है। अपने देश से सबको प्यार है और वे इसे और अच्छा देखने को लालायित भी हैं। इसके लिए वे हर तरह का त्याग भी करने को सदा तैयार रहते हैं। लेकिन जिन्हें हम चुनते हैं वे बार-बार हमें छलते हैं। हमें धोखा देते हैं। हमें निराश करते हैं। और फिर अपनी सारी बेईमानियों और मक्कारियों का ठीकरा ज़्यादा आबादी और गरीबी के सर पर फोड़कर अलग हो जाते हैं। काश! हम कभी उनसे पूछ पाते कि अगर इस देश की जनता इतनी ग़रीब है तो फिर आप क्यों उसके पैसों पर शाही जीवन जीते हैं? आप क्यों इस बात की परवाह नहीं करते कि जनता की पहली ज़रूरत क्या है? और जहां तक सरकारी कार्यक्षमता का सवाल है, हम आए दिन देखते हैं कि सरकार जिस काम में रुचि लेती है वह तो पलक झपकते ही हो जाता है। तब न लाल फीताशाही आड़े आती है न बजट की कमी राह का रोड़ा बनती है! अगर किसी राह पर किसी महामहिम को गुज़रना होता है तो वह तुरंत चकाचक कर दी जाती है, और जिस राह पर हम सब गुज़रते हैं उसकी दुर्दशा पर कभी किसी की नज़र ही नहीं पड़ती। पड़ भी जाती है तो सरकारी कार्यप्रणाली काम की गति को धीमा कर देती है। बारिश के मौसम में टूटी सड़कें होली तक भी सुधार दी जाएं तो गनीमत है। आम आदमी वाले अस्पताल में भले ही डॉक्टर न हों, वीआईपी दौरों के समय एकाधिक डॉक्टर मय स्टाफ के उनकी सेवा में दिन-रात तैनात रहते हैं।

सोचने की बात यह है कि अगर एक छोटा-सा देश, अपने साधनों की सीमाओं के बावज़ूद बेहद खुशहाल देश बन सकता और बना रह सकता है तो आखिर ऐसी क्या बातें हैं कि हमें सतत अभावों और उपेक्षाओं में ही ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ रही है? क्या कभी ये हालात बदलेंगे? क्या कभी ऐसा समय आएगा जब हमारी मूलभूत ज़रूरतें पूरी हो चुकी होंगी और हम भी खुशहाल ज़िंदगी जी रहे होंगे?

कब आएगा वह समय? आएगा भी या नहीं?

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

फ़ैशन की दुनिया में अलग ही शान है जोधपुरी कोट की

- **शादी के अवसर पर दुल्हे के नजदीकी रिश्तेदार जोधपुरी कोट सिलवाना पसंद करते हैं**
- **पहले कोट को बनाने में करीब सात दिन लगे, देखते ही देखते यह कोट जोधपुरी कोट के नाम से पूरे देश में लोकप्रिय हो गया**

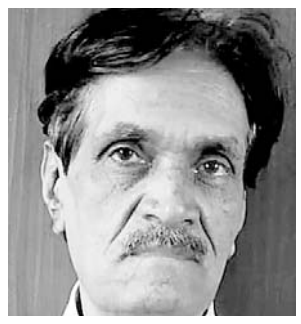

मिश्रीलाल पंवार

आज ऐसा कौन सा व्यक्ति होगा,जो जोधपुरी बन्द गले के कोट के बारे में नहीं जानता हो। अपनी अलग ही आन, बान व शान को लेकर विश्व विख्यात हो चुकी यह मर्दाना पौशाक जन जन की पहली पसंद बन चुकी है। सात समुंदर पार भी इस पौशाक की लोकप्रियता जगजाहिर है।

परिधानों की दुनिया बहुत तेजी से बदलती है। अब तक ना जाने कितने ही डिजाइन फैशन में आए और लुफ्त हो गए, लेकिन जोधपुरी बंद गले का कोट एक ऐसा परिधान है, जिसे सदाबहार कहा जा सकता है। इसको पहनने के बाद व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास, गुरूर और उल्लास का अहसास तो होता ही है, साथ ही बाहरी आवरण की शानोशौकत का मिजाज देखते बनता है। ढीला ढाला व्यक्ति भी जब बन्द गले का जोधपुरी कोट पहन कर चलता है तो उसकी चाल बदल जाती है। हजारों की भीड़ में वह अलग ही नजर आता है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू, राजीव गांधी और मनमोहन सिंह से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तक, सभी की पसंद जोधपुरी कोट रहा है। नौजवानों को भी यह खूब भा रहा है। यह कोट सर्दी से बचाता है वहीं अलग लुक भी देता है। शादी के अवसर पर दुल्हे के नजदीकी रिश्तेदार जोधपुरी कोट सिलवाना पसंद करते हैं। करीब सौ वर्ष पूर्व ईजाद हुए इस मर्दाना पहनावे की फैशन की दुनिया में आज भी धाक कायम है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी के चलते फैशन इतनी तेजी से बदलता है कि कुछ दिनों पूर्व मार्केट में आई नई फैशन देखते ही देखते पुरानी हो जाती है। उसकी जगह नई स्टाइल आ जाती है।

इतिहास के पन्नों में इसकी एक रौचक कहानी है । इस कहानी के अनुसार जोधपुर के सर प्रताप वर्ष 1887 में इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की हीरक जयंती समारोह में भाग लेने लंदन जा रहे थे। संयोग कुछ ऐसा हुआ कि उनका सामान रास्ते में चोरी हो गया। इंग्लैंड पहुंचे तो उनके सामने कपड़ों का संकट खड़ा हो गया। उन्होंने लन्दन में ही कोट का कपड़ा खरीदा। बड़ी मुश्किल से एक दर्जी के पास उन्होंने स्वयं खड़े रहकर बन्द गले के कोट की सिलाई कराई। बाद में इसे पहन कर वे समारोह में गए तो लोग देखते रह गए। सभी लोगों ने उस कोट की शान और आनबान की सराहना की। सर प्रताप पुन: जोधपुर लौटे तब जोधपुर के राज कारीगरों को बुलाया और उसी प्रकार के बन्द गले के कोट सिलने का कहा।

जोधपुर के राज गजधर बड़ी मेहनत व लगन से इस कोट को बनाने में जुट गए । इस पहले कोट को बनाने में करीब सात दिन लगे। इस कोट को देखा तो राज परिवार के अन्य सरदारों को मन भा गया। सबने इस कोट को सिलवाना शुरू कर दिया। देखते ही देखते बन्द गले का यह कोट जोधपुरी कोट के नाम से पूरे देश में लोकप्रिय हो गया। धीरे धीरे देशी रियासतों के राजा महाराजा, सामंत व रईस लोगों की भी यह कोट पहली पसंद बन गया।

धीरे धीरे शहर के नामी टेलरों ने भी बन्द गले के कोट की सिलाई करनी शुरू कर दी। उस जमाने में बन्द गले की कोट की मांग पूरे देश में होने से कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली तथा अहमदाबाद के टेलरों में हड़कंप मच गया क्योंकि उन दुकानदारों के कारीगरों को बन्द गले के कोट सिलने का सही तरीका मालूम नहीं था। रईस लोग इस कोट को सिलवाने जोधपुर आने लगे। इसके बाद इन चारों महानगरों के टेलर

शॉप के मालिकों का ध्यान जोधपुर के कारीगरों की तरफ गया। ये लोग जोधपुर से कारीगरों को अपने साथ ले जाने लगे। धीरे-धीरे पूरे देश में जोधपुर के सिलाई कारीगरों की मांग होने लगी। उस जमाने के कारीगर एक कोट को सिलने में एक सप्ताह समय लगाते थे। इस जोधपुरी कोट की यह विशेषता होती थी कि पच्चीस साल बाद भी ऐसा लगता था जैसे अभी अभी नया बनवाया है।

धीरे-धीरे इसमें कारीगरी वाला काम घटता गया। आज से बीस से पच्चीस साल पहले तक तीन दिन में एक कोट तैयार होता था। आजकल के कारीगरो ने इसकी कलात्मकता को दरकिनार कर दिया है। अब तो लोग एक ही दिन में पूरा कोट बना लेते हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के लिए बन्द गले का कोट सिलने वाले जोधपुर निवासी देवीलाल राखेचा अब इस संसार में नहीं है। पिता के बाद सिलाई की दुकान संभालने वाले किशोर राखेचा ने बताया कि संसार में वस्त्र फैशन बहुत तेजी से बदलता रहता है। राष्ट्रपति से लेकर आम आदमी की यह पहली पसंद है। पहले के जमाने में 90 प्रतिशत कार्य हाथ सिलाई से होता था।अब तो हाथ सिलाई का काम दस प्रतिशत रह गया है। मांगलिक समारोह में जोधपुरी कोट पहले से ज्यादा पसंद किए जाते हैं। राष्ट्रपति से सम्मानित वयोवृद्ध शिक्षक एवं कला पारखी गोविन्द कल्ला का कहना है कि बन्द गले के जोधपुरी कोट शरीर के कई हिस्सों पर एक्यूप्रेशर का काम करता है। यही कारण है कि जोधपुरी कोट पहनते ही व्यक्ति में नई उर्जा का संचार शुरू हो जाता है। व्यक्ति खुद को चुस्त-दुरुस्त महसूस करता करता है।

मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

राष्ट्रीय जंबूरी में ब्यावर की बादशाह की सवारी लोकप्रिय रही

- **ब्यावर के स्काउट अध्यापक विष्णु दत्त गोयल ने सवारी निकालकर एक अंतर्राष्ट्रीय पहचान प्रदान की**

ब्यावर, (निसं)। राष्ट्रीय जंबूरी रोहट पाली में निकाली गई ब्यावर की सुप्रसिद्ध और विश्व विख्यात बादशाह की सवारी अत्यधिक लोकप्रिय रही। राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय ब्यावर के स्काउट अध्यापक विष्णु दत्त गोयल ने बादशाह की सवारी की तरह ही शाही अंदाज में सवारी निकालकर एक अंतर्राष्ट्रीय पहचान प्रदान की।

बादशाह की सवारी में स्थानीय संघ ब्यावर, स्थानीय संघ जवाजा के स्काउटर नरेंद्र सिंह कोटडा तथा सभी बालचरों ने विभिन्न राजस्थानी परिवेश में सजधज कर सहयोग देकर शाही सवारी निकाली।

ब्यावर के सहायक कमिश्नर विमल चौहान, शिव कुमार दुबे, सीबीओ प्रधानाचार्य ताराचंद जांगिड, स्काउट टीचर रामचंद्र शर्मा, बाबूदीन, मोहन सिंह चौहान, सुरेश फुलवारी, चंपालाल सोलंकी, मनोहर, रतन सिंह कालिंजर सहित ने अपना प्रतिनिधित्व किया। सभी अन्य कार्यक्रमों में से अलग हटकर भिन्न कार्यकम होने से पूरे परिसर में चर्चा का विषय बना रहा था।

स्काउट अध्यापक विष्णु दत्त गोयल ने बादशाह की सवारी शाही अंदाज में पेश की।

डॉ. सुनीता घोगरा बनी राजस्थान साहित्य अकादमी की उपाध्यक्ष

- **अकादमी इतिहास में पहली बार भील आदिवासी महिला को मिला यह पद**

चूरू/उदयपुर, (कासं)। राजस्थान सरकार द्वारा नियुक्त राजस्थान साहित्य अकादमी अध्यक्ष डॉ दुलाराम सहारण द्वारा पदभार संभालने के बाद से ही कई अभिनव निर्णय लिए जा रहे हैं। अध्यक्ष डॉ सहारण के निर्देशन में हाल ही में गठित 19वीं सरस्वती सभा की प्रथम बैठक शुक्रवार एवं शनिवार को उदयपुर अकादमी मुख्यालय में आयोजित हुई।

बैठक में ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए आदिवासी वर्ग के भील समुदाय की डॉ सुनीता घोगरा को उपाध्यक्ष के पद पर चुना गया। अकादमी अध्यक्ष ने बताया कि पहली बार किसी महिला एवं जनजाति समुदाय की महिला को अकादमी का उपाध्यक्ष चुना गया है। अकादमी के इस कदम की साहित्यप्रेमियों ने प्रशंसा की है। लेखिका डॉ घोगरा डूंगरपुर जिले में राजकीय शिक्षिका के तौर पर सेवाएं दे रही हैं। उपाध्यक्ष डॉ घोगरा ने कहा है कि वे अपना अधिकतम योगदान देते हुए अकादमी की अपेक्षाओं पर खरा उतरेंगी। अपनी पुस्तक मताई के लिए चर्चित रही डॉ घोगरा ने कहा कि उन्हें शुरू से ही साहित्य से गहरा लगा रहा लेकिन कभी सोचा नहीं था कि अकादमी उपाध्यक्ष के पद पर सेवाएं देने का मौका मिलेगा। इसी प्रकार से चूरू जिले के कमल कुमार शर्मा को कोषाध्यक्ष पद पर चुना गया। दोनों ही पदाधिकारियों का अकादमी की सरस्वती सभा के सदस्यों ने स्वागत किया और शुभकामनाएं दी। सरस्वती सभा की प्रथम बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए। इसमें अकादमी के बंद पड़े पुरस्कारों को पुन: शुरू करने, पुरस्कार राशि में वृद्धि कार्यक्रमों की राशि में वृद्धि, अकादमी अतिथि गृह निर्माण, साहित्यकार परिचय कोश, पांडुलिपि प्रकाशन योजना, मधुमती के आवरण परिवर्तन, प्रारंभ से अब तक मधुमती के समस्त अंकों का डिजिटलाईजेशन, अकादमी पुस्तकों की ऑनलाइन बिक्री, एक अप्रैल से 25 प्रतिशत छूट पर अकादमी पुस्तकों के विक्रय, दृश श्रव्य रिकॉर्डिंग कक्ष सहित विभिन्न विषयों को लेकर सरस्वती सभा ने चर्चा करते हुए निर्णय लिए।

रक्षा मामलों की समिति ने पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज का दौरा किया

जैसलमेर/पोकरण, (निसं)। रक्षा संबंधी स्थायी समिति के लिए संसद सदस्यों के प्रतिनिधिमंडल ने जैसलमेर के पास स्थित पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज का दौरा किया और एकीकृत अग्नि शक्ति प्रदर्शन देखा।

उन्होंने बहुमुखी और स्वदेशी निर्मित हथियार प्रणालियों को भी देखा और लक्ष्य भेदने के प्रभाव के साथ मॉक युद्ध क्षेत्र की स्थिति में उनका जायजा लिया। उन्होंने भारतीय सेना द्वारा प्रशिक्षण की भविष्य की आवश्यकताओं को अपनाने के लिए रेंज में मौजूदा और नियोजित बुनियादी ढांचे के विकास की भी समीक्षा की। समिति आज सोमवार को जैसलमेर का दौरा करेगी जहां उन्हें पुणे स्थित दक्षिणी कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल एके सिंह द्वारा जानकारी दी जाएगी।

समिति में अध्यक्ष जुआल ओराम एम पी के साथ एससीओडी के 22 अन्य सदस्य हैं। एससीओडी एक समिति है जिसमें रक्षा नीतियों और रक्षा मंत्रालय के निर्णय लेने के विधायी अवलोकन के उद्देश्य से संसद के चयनित सदस्य शामिल हैं।

रक्षा संबंधी स्थायी समिति के संसद सदस्यों ने जैसलमेर फील्ड फायरिंग रेंज में शक्ति प्रदर्शन देखा।

विराट का अवार्ड के लिए चयन

डूंडलोद, (निसं)। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने स्कूली बच्चों को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं। राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने एक बहुउद्देशीय परियोजना का संचालन किया है। इसमें सबसे ज्यादा लोकप्रिय इंस्पायर पुरस्कार प्रेरित अनुसंधानद्ध योजना है। जिसमें कक्षा 6से 10 तक के स्कूल विद्यार्थी अपने नए नए आविष्कारों को विद्यालयों को प्रेषित करते हैं। जिसमें से कुल 5 विद्यार्थियों के प्रोजेक्ट्स को विद्यालय नामित करता है। डूंडलोद पब्लिक स्कूलए डूंडलोद के कक्षा 7 के विद्यार्थी विराट शर्मा पुत्र कमल शर्मा का चयन इंस्पायर अवार्ड के लिए जिला झुंझुनूं से किया।

इससे विद्यालय परिवार मे हर्ष व्याप्त हो गया। विद्यालय सचिव बीएल रणवां ने मास्टर विराट की सफलता पर भौतिक शास्त्र प्रवक्ता राहुल मिश्रा तथा विराट के परिवारी जनों को बधाई दी। प्राचार्य जी. प्रकाश ने कहा कि सतत मिलने वाली सफलताएं कार्मिकों और विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करती हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 9 जनवरी, 2023

माघ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, अश्लेषा नक्षत्र मंगलवार प्रात: 9:01 तक, विष्कुम्भ योग दिन 10:31 तक, गर करण प्रात: 9:40 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-मकर, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा रात्रि 10:55 से मंगलवार दिन 12:10 तक है। आज द्वितीया तिथि में वृद्धि हुई है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:57 से 11:15 तक, चर 1:52 से 3:10 तक, लाभ-अमृत 3:10 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:46

मेष
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

कर्क
मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। धन हानि का भय है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में आज धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।